अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल

तत्त्व ज्ञान (वर्ष : 2022) दिनांक : 20.08.2022

समय सीमा : 3 घंटा षष्टम वर्ष : द्वितीय प्रश्न पत्र पूर्णांक : 100

पच्चीस बोल, तत्त्व चर्चा, पच्चीस बोल की चर्चा, पच्चीस बोल की चतुर्भंगी–20

प्र. 1 **(पच्चीस बोल)** किन्हीं पांच प्रश्नों के अति संक्षिप्त उत्तर दें– 5

(क) संसारी आत्माओं के निवास स्थान को क्या कहते हैं?

(ख) चारित्र शब्द का 2 नं. अर्थ लिखें।

(ग) आठ कोटि त्याग में कितने भांगे रूकते हैं? पूरी संख्या लिखें।

(घ) उपयोग शब्द का अर्थ लिखें।

(ङ) द्रव्य या जीव जिस चिन्ह से पहचाना जाए उसे क्या कहते हैं?

(च) 12वें तथा 15वें आश्रव का नाम लिखें।

(छ) 5वें व 8वें दण्डक का नाम लिखें।

प्र. 2 **(तत्त्व चर्चा)** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर एक या दो लाईन में लिखें– 5

(क) बंध छह में कौन? नौ में कौन?

(ख) छह द्रव्य में सावद्य कितने? निरवद्य कितने?

(ग) कर्म और कर्म का कर्ता एक या दो?

(घ) दया छह में कौन? नौ में कौन?

(ङ) पुण्य और धर्म एक या दो?

(च) कर्मों का कर्ता छह में कौन? नौ में कौन?

(छ) पाप छह में कौन? नौ में कौन?

प्र. 3 **(पच्चीस बोल की चर्चा)** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 5

(क) चार द्रव्य।

(ख) बीस दण्डक।

(ग) जीव के नौ भेद।

(घ) दस योग।

(ङ) छह गुणस्थान।

(च) चार लेश्या।

(छ) तीन आत्मा।

प्र. 4 **(चतुर्भंगी)** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर दें– 5

(क) किस ध्यान वाले जीव कम किस ध्यान वाले जीव अधिक?

(ख) योग जीव या अजीव?

(ग) किस भेद के जीव कम किस भेद के जीव अधिक?

(घ) आत्मा किस कर्म का उदय?

(ङ) कौन सा द्रव्य कम, कौन सा द्रव्य अधिक?

(च) तुम्हारे में मोक्ष तत्त्व के भेद कितने?

(छ) किस निर्जरा वाले जीव कम, किस निर्जरा वाले जीव अधिक?

जैन तत्त्व प्रवेश (प्रथम खण्ड) कर्म प्रकृति–20

प्र. 5 **(जैन तत्त्व प्रवेश)** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) परमात्म द्वार।
(ख) रूपी-अरूपी द्वार।
(ग) वस्तुत्व व अगुरुलघुत्व किसे कहते हैं?
(घ) विस्तार-द्वार आश्रव के भेदों का वर्णन करें।
(ङ) पूर्व अवस्था की अपेक्षा सिद्धों के भेदों का नाम लिखें।
(च) दृष्टांत द्वार के अंतर्गत जीव-अजीव की व्याख्या करें।
(छ) षडद्रव्य द्वार–जीवास्तिकाय के बाद वाला पूरा वर्णन करें।

प्र. 6 **(कर्म प्रकृति)** किन्हीं पांच प्रश्नों के उत्तर लिखें– 10

(क) उदीरणा किसे कहते हैं?
(ख) वेदनीय कर्म की स्थिति लिखें।
(ग) चारित्र मोह कर्म के यंत्र के आधार पर अप्रत्याख्यानी या प्रत्याख्यानी का वर्णन करें।
(घ) विहायोगति नाम कर्म की व्याख्या करें।
(ङ) सांपरायिक कर्म का वर्णन करें।
(च) प्रत्येक प्रकृति की दूसरी, तीसरी व पांचवीं छठी प्रकृति का वर्णन करें।
(छ) कर्म के विपाकोदय में कार्यकारी निमित्तों का उल्लेख करें।

बावन बोल, इक्कीस द्वार, जैन तत्त्व प्रवेश (द्वितीय, तृतीय खण्ड)–20

प्र. 7 **(बावन बोल)** किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) संवर के बीस बोल कितने भाव? कितनी आत्मा?
(ख) उदय के तैतीस बोलों में सावद्य कितने? निरवद्य कितने?
(ग) चौदह गुणस्थानों में शरीर कितने?
(घ) अठारह पाप स्थान का उदय उपशम क्षायिक क्षयोपशम निष्पन्न छह द्रव्य में कौन? नौ तत्त्व में कौन?

प्र. 8 **(इक्कीस द्वार)** किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 6

(क) अचरम–योग, उपयोग, भाव दृष्टि।
(ख) अपर्याप्त–आत्मा, योग, पक्ष, दृष्टि।
(ग) अनाहारक–वीर्य, दृष्टि, उपयोग, जीव के भेद।
(घ) विभंग ज्ञान–दण्डक, भाव, जीव के भेद, लेश्या।

प्र. 9 **(जैन तत्त्व प्रवेश)** किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) व्रताव्रत द्वार–चारित्र के अधिकारी निर्ग्रंथ होते हैं। यहां से प्रारंभ करते हुए अनगार व अगार धर्म की व्याख्या तक करें।

(ख) तीन पद्य पूरा करें–

(1) दव देवो.....

(2) शील आदरियो.....

(3) चोर हिंसक.....।।

(ग) आगम द्वार–परिभाषा लिखते हुए दृष्टिवाद के भेदों तक लिखें।

लघु दण्डक व पांच ज्ञान–20

प्र. 10 **(लघु दण्डक)** किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें (कोई तीन द्वार)– 12

(क) समुद्घार द्वार

(ख) उत्पत्ति द्वार

(ग) देवों की स्थिति

(घ) वेद द्वार

(ङ) लेश्या द्वार–भवनपति से प्रारंभ करते हुए अंत तक लिखें।

प्र. 11 **(पांच ज्ञान)** किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) वर्धमान अवधिज्ञान

(ख) सम्पूर्ण आकाश.....से प्रारंभ करते हुए.....सदाकाल उद्घाटित रहता है, तक लिखें।

(ग) मनःपर्यवज्ञान का विषय–क्षेत्रतः की व्याख्या करें।

संजया, नियंठा–20

प्र. 12 **(संजया)** किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर लिखें– 12

(क) छेदोपस्थापनीय चारित्र–अंतर द्वार लिखते हुए बताऐं कि अनेक जीवों की अपेक्षा उत्कृष्ट अंतर किस अपेक्षा से है?

(ख) सूक्ष्म संपराय–आकर्ष द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक भव की अपेक्षा से उत्कृष्ट आकर्ष किस अपेक्षा से है?

(ग) परिहार विशुद्धि–स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीवों की अपेक्षा से उत्कृष्ट स्थिति किस प्रकार घटित होती है?

(घ) परिणाम द्वार–यथाख्यात चारित्र वालों का परिणाम द्वार लिखते हुए बतायें कि अवस्थित की उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से है?

प्र. 13 **(नियंठा)** किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर लिखें– 8

(क) पुलाक–स्थिति द्वार लिखते हुए बतायें कि अनेक जीव की अपेक्षा उत्कृष्ट स्थिति किस अपेक्षा से है?

(ख) जयाचार्य ने भगवती की जोड़ में जो अपना अभिप्राय बताया है उसकी व्याख्या करें।

(ग) समस्त साधुओं की संख्या प्रत्येक हजार करोड़ है–इसका तात्पर्य क्या है। इसकी पूर्ण व्याख्या करें।